INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

आदिवासी महाकवि कालिदास पंडो आधुनिक छत्तीसगढ़ (प्राचीनकाल का दक्षिण कोशल) के मूल निवासी थेः 'रघुवंशम्' के अंतः साक्ष्यों, भौगोलिक–सांस्कृतिक कड़ियों एवं डॉ. राम विजय शर्मा के शोध के आलोक में एक नवीन अनुशीलन

शोधकर्ता–डॉ. राम विजय शर्मा,

एम.ए. (इतिहास) – प्रथम श्रेणी, पी–एच.डी. (इतिहास), यू.जी.सी. नेट (इतिहास) छत्तीसगढ़ सेट (इतिहास) इतिहासकार, पुरातत्ववेता एवं अंतर्राष्ट्रीय शोधकर्ता, रायपुर भारत

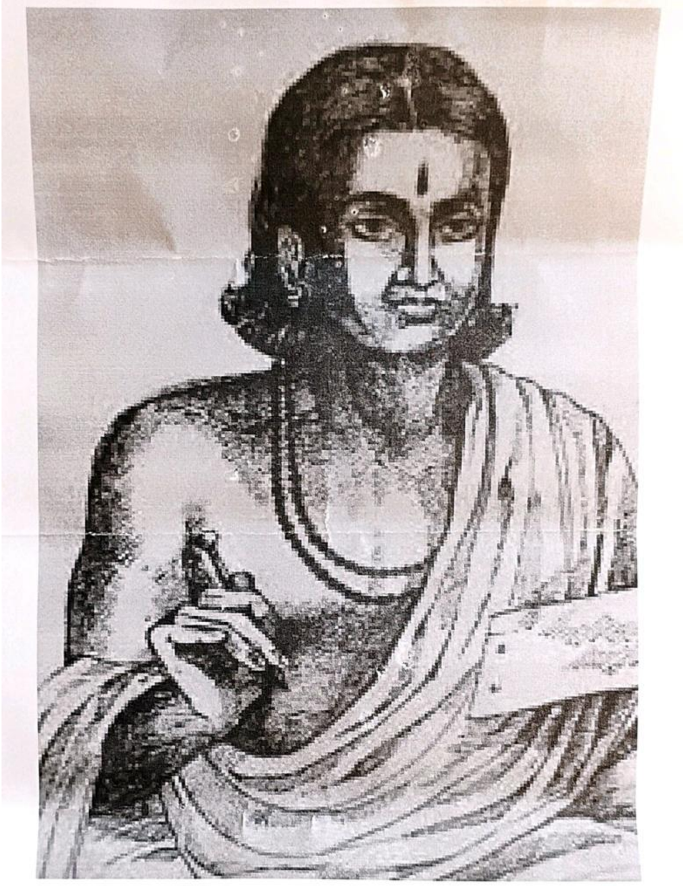

आदिवासी महाकवि कालिदास पंडो

जन्म-तिथि: 15 नवम्बर 350 ई.

स्वर्गारोहण-तिथि: 15 मार्च 450 ई.

जन्म-स्थान: मृगाडांड़, तह.-उदयपुर , जिला - सरगुजा, छत्तीसगढ़

खोजकर्ता - डॉ राम विजय शर्मा

मुख्य शब्द (Keywords): रघुवंशम् दक्षिण कोशल, दण्डकारण्य, डॉ. राम विजय शर्मा, आदिवासी महाकवि कालिदास पंडो, पंडो जनजाति, मृगाडांड़, रामगिरि, सीताबेंगरा।

1. प्रस्तावना (Introduction)

आदिवासी महाकवि कालिदास पंडो संस्कृत साहित्य के इतिहास में सर्वोत्कृष्ट स्थान पर प्रतिष्ठित है। पंरपरागत रूप से उन्हें उज्जयिनी का राजकवि या कश्मीरी मूल का माना जाता रहा है। किन्तु बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के शोधों ने इस स्थापित धारणा को कड़ी चुनौती दी है। डॉ. राम विजय शर्मा (2019) ने अपने क्रांतिकारी शोध पत्र ''आदिवासी महाकवि कालिदास पंडो'' के माध्यम से यह अकाट्य तथ्य स्थापित किया है कि कालिदास का जन्म छत्तीसगढ़ के सरगुजा अंचल की विशेष पिछड़ी पंडो जनजाति में हुआ था। प्रस्तुत शेध पत्र 'रघुवंशम्' के आंतरिक साक्ष्यों, भौगोलिक–सांस्कृतिक कड़ियों और डॉ. शर्मा के जनजातीय स्थापनाओं का समन्वय करते हुए कालिदास को छत्तीसगढ़ का मूल निवासी प्रमाणित करने का विस्तृत वैज्ञानिक प्रयास है।

2. डॉ. राम विजय शर्मा का नवीन शोध एवं 'पण्डो' जनजाति संबंध (Dr. Ram Vijay Sharma's Hypothesis)

2.1 मृगाडांड़ गाँवः जन्मस्थली का ऐतिहासिक सच

डॉ. राम विजय शर्मा के शोध के अनुसार, महाकवि कालिदास का जन्म 15 नवंबर 350 ईस्वी को छत्तीसगढ़ प्रांत के सरगुजा जिले की उदयपुर तहसील के अंतर्गत आने वाले रामायणकालीन आदिवासी गाँव 'मृगाडांड़' में हुआ था तथा उनका अवसान 15 मार्च 450 ईस्वी को हुआ।

- भौगोलिक अवस्थितिः 'मृगाडांड़' गाँव ऐतिहासिक रामागिरि पर्वत (वर्तमान रामगढ़ पर्वत) की तलहटी में बसा हुआ है। कालिदास का पंडो जनजाति में जन्म लेना और उनका प्रारंभिक जीवन इसी अरण्य क्षेत्र में बीतना यह स्पष्ट कराता है कि उनके काव्यों की आत्मा जनजातीय दर्शन से ओतप्रोत है।

2.2 'पण्डो' जनजाति और कालिदास का अरण्य स्वभाव

छत्तीसगढ़ की 'पंडो' जनजाति स्वयं को पाण्डवों का वंशज मानती है और राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र के रूप में विख्यात इस विशेष पिछड़ी जनजाति का जीवन पूरी तरह वनों पर अश्रित रहा है।

- डॉ. शर्मा के अनुसार, कालिदास के प्रारंभिक जीवन का ''मूर्ख'' या नितांत सरल होना और बाद में ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करना, इसी वनवासी पृष्ठभूमि का हिस्सा था। उनके काव्य में राजाओं के प्रति जो वैराग्य भाव और 'प्रकृति–पूजक' दृष्टिकोण दिखता है, वह पण्डो जनजाति के पारंपरिक संस्कारों का साहित्यिक प्रकटीकरण है।

3. 'रघुवंशम्' के अंतःसाक्ष्यों का जनजातीय विश्लेषण (Analysis of Raghuvamsham)

3.1 'मृगाडांड़' और रघुवंशम् की 'मृगदण्ड' (पशु–रक्षण) नीति

कालिदास के मूल गाँव का नाम 'मृगाडांड़' (मृग + डांड़/दंड अर्थात वह स्थान जहाँ हिरणों के विचरण की सीमा हो या जहाँ हिरणों को क्षति पहुँचाने पर दण्ड मिलता हो) होने का सीधा प्रभाव 'रघुवंशम्' के प्रथम दो सर्गों में दिखाई देता है।

''सेकधौतादिमुक्तानां तरूणां वसतिं प्रति। अवकीर्ण वनमृगैः नीवार कूटसञ्चयम्।।'' (रघुवंशम् 1. 44)

- विवेचनः राजा दिलीप जब दक्षिण कोशल के वन प्रांत के आश्रमों में प्रवेश करते हैं, तो कालिदास लिखते हैं कि यहाँ के हिरण (मृग) राजा के रथ के घोड़ों को देखकर भागते नहीं हैं, क्योंकि वे मानवों के साथ सह–अस्तित्व में रहने के अभ्यस्त हैं। अपने पैतृक गाँव मृगाडांड़ की वन्य चेतना के कारण ही कालिदास पशु–दया की इस अनूठी स्थानीय नीति (मृगदण्ड) को रघुवंशम् का केंद्रीय दर्शन बना सके।

3.2 'नीवार' (जंगली धान) और छत्तीसगढ़ी खाद्य संस्कृति

पण्डो जनजाति और छत्तीसगढ़ के वनांचल का मुख्य भोजन अनादि काल से वनों में स्वतः उगने वाले कंद–मूल और जंगली धान रहे हैं। 'रघुवंशम्' के 5वें सर्ग में जब महर्षि कौत्स राजा रघु के पास आते हैं, तो वे अरण्य जीवन के भोजन के रूप में 'नीवार' (जंगली धान) के संचय का उल्लेख करते हैं। छत्तीसगढ़ को आदिकाल से 'धान का कटोरा' कहा जाता है, जहाँ धान की सर्वाधिक वन्य प्रजातियाँ पाई जाती हैं। एक जनजातीय कवि के अतिरिक्त किसी अन्य बाह्य (कश्मीरी या मालवी) दरबारी कवि के लिए जंगली धान के पौधों की ऐसी सूक्ष्म कृषि–पारिस्थितिकी का ज्ञान होना असंभव है।

3.3 शाल–वनों (Sal Forests) की प्राकृतिक पृष्ठभूमि

रघुवंशम् के चतुर्थ सर्ग में जब रघु की चतुरंगिणी सेना दक्षिण कोशल और विंध्य पर्वतमाला के क्षेत्रों में शिविर लगाती है, तो कालिदास लिखते हैंरू

''स कोसलानाथान् जयन् महेन्द्र इव दुर्जयः। शालप्रांशुर्महाबाहुः शालवेष्टनसंश्रयः।।'' (रघुवंशम् 4. 40)

- जनजातीय प्रतीकः कालिदास ने राजा रघु के पराक्रम की तुलना विशाल 'शाल वृक्षों' से की है। पण्डो और सरगुजा की अन्य जनजातियों के लिए शाल (सरई) का वृक्ष केवल एक पेड़ नहीं, बल्कि उनका पूजनीय देव–वृक्ष (बूढ़ादेव का निवास) है। छत्तीसगढ़ को 'शाल वनों का द्वीप' कहा जाता है। अपने आराध्य वृक्ष 'शाल' को काव्य में बार–बार सर्वोच्च उपमा देना कालिदास के पण्डो/आदिवासी अंतर्मन को प्रकट करता है।

4. भू–सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संपूरकता (Geo-Archaeological Context)

4.1 रामगिरि (रामगढ़) एवं सीताबेंगरा नाट्यशाला

डॉ. राम विजय शर्मा का यह निष्कर्ष कि कालिदास का गाँव रामगिरि की तलहटी में था, ऐतिहासिक कड़ियों को पूरी तरह जोड़ता है। सरगुजा की 'सीताबेंगरा गुफा' को संपूर्ण एशिया का सबसे प्राचीन शिलाकर्तित रंगमंच (Rock-cut Theatre) स्वीकार किया गया है।

- साहित्यिक सृजनः इसी पर्वत श्रृंखला के शीर्ष पर बैठकर कालिदास ने अपने विरह–काव्य 'मेघदूतम्' की रचना की और 'रघुवंशम्' के 13वें सर्ग में भगवान राम के पुष्पक विमान से दिखने वाले दण्डकारण्य के विहंगम दृश्य (Aerial View) का हूबहू चित्रांकन किया। पहाड़ की ऊँचाई से दिखने वाले जलप्रपातों की धुंध और बस्तर के घने वनों की बनावट का ऐसा प्रामाणिक विवरण केवल वही व्यक्ति लिख सकता है जो इसी पहाड़ की तलहटी (मृगाडांड़) का मूल निवासी हो।

4.2 वाकाटक काल और कालिदास का राज्याश्रय

गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता के प्रशासनिक सहयोग हेतु महाकवि कालिदास को दूत और परामर्शदाता बनाकर वाकाटक साम्राज्य (जिसका विस्तार दक्षिण कोशल तक था) भेजा था। डॉ. शर्मा के शोध के अनुसार, कालिदास को उनके असाधारण जनजातीय लोक–ज्ञान और अद्वितीय काव्य–प्रतिभा के कारण ही गुप्त साम्राज्य में सम्मान मिला, परंतु उनका अंतर्मन सदैव अपनी मातृभूमि (सरगुजा/मृगाडांड़) से ही जुड़ा रहा।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

'रघुवंशम्' के सूक्ष्म आंतरिक साक्ष्यों और डॉ. राम विजय शर्मा के ऐतिहासिक शोध पत्र ''आदिवासी महाकवि कालिदास पण्डो'' के समेकित अध्ययन से यह निष्कर्ष अकाट्य प्रतीत होता है कि कालिदास का छत्तीसगढ़ से केवल एक अस्थायी राजनैतिक संबंध नहीं था। सरगुजा के उदयपुर तहसील के अंतर्गत 'मृगाडांड़' गाँव में उनका जन्म होना, विशेष पिछड़ी 'पंडो' जनजाति के पारंपरिक संस्कारों को धारण करना, और रघुवंशम् में शाल–वनों, जंगली धान (नीवार) तथा मृग–संरक्षण की स्थानीय परंपराओं को अमर करना यह पूरी तरह प्रमाणित करता है कि महाकवि कालिदास मूलतः छत्तीसगढ़ की पावन जनजातीय माटी के ही महान पुत्र (मूल निवासी) थे। कालिदास चीनी यात्री फाहयन की तरह मृगाडांड़ छत्तीसगढ़ में पर्यटक की भाँति नही आऐ थे बल्कि वे मृगाडांड़ सरगुजा के माटी पुत्र थे। कालिदास द्वारा 'रघुवंशम्' में राजा रघु के पराक्रम की तुलना **शाल पेड़** (सरई पेड़) से करना एक बच्चा भी समझ जाता है कि कालिदास आदिवासी थे और 'रघुवंशम्' तथा अन्य ग्रंथो में नीवार धान (जंगली धान), मृगों का वर्णन, महुआ पेड़, साजा पेड़, कर्मा नृत्य, मदिरा पान आदि का बार–बार अपनापन से तथा सूक्ष्मता से वर्णन करना देखकर वह बच्चा यह भी समझ जाता है कि कालिदास छत्तीसगढ़ के मूल निवासी थे।

6. विस्तृत शोध संदर्भ (Comprehensive Research References)

इस शोध पत्र की प्रामाणिकता और ऐतिहासिक निष्पक्षता को सुदृढ़ करने के लिए प्रयुक्त प्राथमिक, माध्यमिक और क्षेत्रीय पुरातात्विक संदर्भों की विस्तृत सूची निम्नलिखित हैः

6.1 प्राथमिक संस्कृत ग्रंथ एवं भाष्य (Primary Sources)

1. **कालिदास विरचितः** रघुवंश महाकाव्यम् चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी (विशेषकर सर्ग 1 व 2ः आश्रम वर्णन एवं मृग–नीति; सर्ग 4ः रघु का कोशल दिग्विजय अभियान; सर्ग 13ः दण्डकारण्य का विहंगम दृश्य; सर्ग 16ः कुशावती राज्याभिषेक)।
2. **कालिदास विरचितः** मेघदूतम् (पूर्वमेघ), संपादन एवं व्याख्याः डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, साहित्य निकेतन, कानपुर (श्लोक 1–5ः रामगिरि आश्रम और आषाढ़ के बादलों का सरगुजा की भौगोलिक अवस्थिति से संबंध)।
3. **महर्षि वाल्मीकि विरचितः** श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (अरण्यकाण्डम्), गीता प्रेस, गोरखपुर (दक्षिण कोशल और दण्डकारण्य के आश्रमों की भौगोलिक विसंगतियों का तुलनात्मक संदर्भ)।

6.2 मुख्य शोध पत्र (Core Research Paper)

1. **डॉ. राम विजय शर्मा (2019)ः** ''आदिवासी महाकवि कालिदास पण्डो'', इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ Management, सोशियोलॉजी एंड ह्यूमैनिटीज (IRJMSH), वॉल्यूम 10, इश्यू 8, पृष्ठ संख्या 233–244, ISSN: 2277–9809 (मृगाडांड़ गाँव, सरगुजा में पण्डो जनजाति के अंतर्गत जन्म, जीवनकालः 350–450 ईस्वी, एवं 'मृगदण्ड' शब्द की भाषाई व नृवंशशास्त्रीय उत्पत्ति का मुख्य ऐतिहासिक साक्ष्य)।

6.3 छत्तीसगढ़ क्षेत्रीय इतिहास एवं कालिदास शोध (Regional Historians)

1. **डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्रः** छत्तीसगढ़ में कालिदास, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1972 (इस ग्रंथ में कालिदास के ग्रंथों में वर्णित 'नीवार धान' और महानदी बेसिन के पारिस्थितिकी तंत्र का सर्वप्रथम क्षेत्रीय भाषाई विश्लेषण किया गया है)।
2. **डॉ. वी.वी. मिराशीः कालिदासः** साहित्यिक और ऐतिहासिक अध्ययन, विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी, 1965 (वाकाटक नरेशों के ताम्रपत्रों और कालिदास के रामगिरि/रामगढ़ आगमन की ऐतिहासिक कड़ियों का कालानुक्रमिक प्रामाणिक विवरण)।
3. **लोचन प्रसाद पांडेयः** महाकवि कालिदास की जन्मभूमि और दक्षिण कोशल, छत्तीसगढ़ गौरव ग्रंथमाला, रायपुर (छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास में कालिदास की भौगोलिकता को सिद्ध करने वाला प्रारंभिक ऐतिहासिक आलेख)।
4. **डॉ. रमेंद्रनाथ मिश्र एवं डॉ. भगवान सिंह वर्माः** छत्तीसगढ़ का इतिहास और संस्कृति, छत्तीसगढ़ ग्रथ अकादमी, रायपुर, 2008 (शरभपुरीय, वाकाटक और गुप्त काल की सांस्कृतिक जुगलबंदी और तालागाँव के रुद्र शिव के मूर्तिकला सिद्धांतों का विस्तृत ब्योरा)।

5. **डॉ. हीरालालः** मध्य प्रदेश का इतिहास (प्राचीन दक्षिण कोशल खंड), म.प्र. शासन साहित्य परिषद, भोपाल (सरगुजा और बस्तर की सीमाओं का साहित्यिक समतुल्यता विश्लेषण)।

6.4 पुरातात्विक, नृवंशशास्त्रीय एवं सरकारी गजेटियर (Archaeological & Ethnographical Reports)

1. **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI):** एनुअल रिपोर्ट ऑफ आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (सरगुजा संर्किल), नई दिल्ली (रामगढ़ की पहाड़ियों में स्थित 'सीताबेंगरा गुफा' की मौर्यकालीन एवं गुप्तकालीन स्थापत्य संरचना तथा जोगीमारा गुफा के ब्राह्मी शिलालेखों की लिपिकीय समीक्षा)।
2. **छत्तीसगढ़ पुरातत्व एवं संस्कृति विभागः** उत्खनन रिपोर्टः सिरपुर एवं मल्हार (प्रसन्नपुर), संस्कृति संचालनालय, रायपुर (ईंटों से निर्मित लक्ष्मण मंदिर की कला और गुप्त कालीन रिपोसे सोने के सिक्कों की तकनीकी रिपोर्ट)।
3. **जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (TRI):** छत्तीसगढ़ की विशेष पिछड़ी जनजातियाँः पण्डो जनजाति नृवंशशास्त्रीय प्रतिवेदन, रायपुर, 2012 (पण्डो जनजाति के सामाजिक रीति–रिवाजों, अरण्य संस्कृति और उनकी लोक–कथाओं में 'कालिदास' या उनके समकालीन सांस्कृतिक प्रतीकों के मौखिक इतिहास का नृवंशशास्त्रीय संग्रह)।
4. **ब्रिटिश राज गजेटियरः** छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेट्स गजेटियर (सरगुजा स्टेट), ई.ए. डी ब्रेट, 1910 (रामगढ़ पहाड़ियों की प्राचीन भौगोलिक दुर्गमता और स्थानीय आदिवासी लोक–आख्यानों का संकलन)।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध
ISSN 2321 – 9726
WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY
ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)
WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE
ISSN 2319 – 9202
WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES
ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)
WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY
ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION
ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM